RNI No.: DEL/BIL/2004/14598

Youngster

YOUNGSTER | ESTABLISHED 2004 | NEW DELHI | SEP 2012 | PAGES - 8 | PRICE - 1/- | MONTHLY BILINGUAL (HINDI/ENGLISH)

टैक्निया में ओरिएन्टेशन कार्यक्रम

बीजेएमसी के विद्यार्थियों ने की शिरकत

टैक्निया इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज़ रोहिणी, दिल्ली में बीजेएमसी प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों के लिए ओरिएन्टेशन कार्यक्रम टैक्निया ऑडीटोरियम में आयोजित किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य नए विद्यार्थियों को उनके विषयों के साथ इंस्टीट्यूट व इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय के नियमों को बताना था।

दिन का शुभारंभ सरस्वती वंदना एवं दीप प्रज्जवलन के साथ हुआ। टैक्निया ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस के चेयरमैन श्री राम कैलाश गुप्ता ने कहा कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए सैद्धांतिक एवं व्यवहारिक ज्ञान के सम्मिश्रण पर जोर देते हुए कहा कि सफलता के लिए सतत् कड़ी मेहनत, लग्नशीलता एवं आत्मविश्वास जरूरी है।

डायरेटर जनरल डा0 कंवल सिंह ने विद्यार्थियों को मौजूद वातावरण के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि यह कोर्स एक व्यवहारिक कुशलता की मांग करता है और विद्यार्थियों को व्यवहारिक ज्ञान भी प्रचुर मात्रा में अर्जित करना चाहिए।

टैक्निया इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज के निदेशक डा0 अजय कुमार राठौड़ ने विद्यार्थियों को आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में मीडिया और पत्रकारिता विषय के महत्त्व के बारे में बताया।

बीजेएमसी के विभागाध्यक्ष डा0 भरत कुमार ने विद्यार्थियों के व्यवसायिक प्रशिक्षण पर जोर दिया। सभी शिक्षकों ने अपने अपने विषय के बारे में जानकारी दी और जीवन में अपने विषयों की उपयोगिता के बारे में बताया।

प्रो. राजेश बजाज ने नए विद्यार्थियों का स्वागत करते हुए कहा कि सबसे पहले जिंदगी में अपको अपने लिए करना है तब दूसरों की बारी आएगी इसी तरह आप यहां पर जो समय व्यतीत कर रहे हैं उसमें कुछ न कुछ जरूर सीखें।

डा0 अजय प्रताप सिंह ने टैक्निया इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज की प्रजेन्टेशन प्रस्तुत की। विपुल प्रताप, प्रोग्राम कोऑर्डिनेटर बीजेएमसी ने विद्यार्थियों को कोर्स व परीक्षा नियमों के संबंध में जानकारी दी।

प्रो0 राजेश बजाज, राहुल मित्तल, पंकज शर्मा, हनी शाह, विपुल प्रताप, डा0 रचिता श्रीवास्तव रॉय, भावना मदान, विजय सिंघल, शिवानी सोलंकी, गौरव ठाकरान, कुलदीप, आदि ने इस कार्यक्रम को आयोजित करने में सहयोग दिया।

Happy Teachers Day, Founders Day & Happy Birthday to Chairman

3 in One Celebration

Happy Teachers Day, Founders Day & Happy Birthday to Chairman

Charming youngsters of Tecnia Group of Institutions gripped the audience at the Grand Auditorium of Tecnia Institute of Advanced Studies to mark its 14th Foundation Day and mark celebrations of Teacher's Day which, began with presentation of Saraswati Vandana & Lighting of Inaugural Lamp by Chairman Mr. Ram Kailash Gupta, his wife Mrs. Kusum Gupta, Dr. Nirmal Singh, Dr. Ajay Rathore, Director & other institutional heads of the Group.

A variety of programs like *Bollywood Mix, Classical Singing, Fashion show* & *Dancing* were presented by Students and Staff members of Tecnia Group of Institutions, function reflected a mixture between traditional & modernized form of culture. Students of Tecnia Group presented dance on various bollywood numbers which enthralled the audience.

It was an important day in the history of Tecnia as on this Day was founded by its Chairman Mr. R.K Gupta. Mrs. Kusum Gupta, was also present during Tecnia Groups of Institution Celebrations which Co-incidentally also falls on the eve of birthday of the Chairman.

Addressing the Function as Chief Guest, Chairman, Mr. R.K. Gupta reiterated his commitment to work hard with dedicated faculty and staff members in field of Education from K.G. to P.G. level. Specially challenged students would be provided free of cost education by the Tecnia Group of Institutions. Later, he felicitated the teachers with Best Faculty, Best Mentor and Best Promising Faculty awards and the other officials of Institute for their outstanding performance in building up the Institute and Nation as a whole.

Guest Lecture on Skin Treatment

A seminar was organized by Tecnia Institute of Advanced Studies, Rohini for Skin Disease and its cure. Mr. Anuj Sharma (Regional Manager), Mr. Avinash Pandaya (Member of management for scientific) and Dr. Avnish Goel (Dermatologist & Cosmetologist) gave the knowledge about the skin diseases and its prevention and cure.

Mr. Avinash Pandaya detailed about the "Skin diseases". He said that skin is the largest organ in our body and we should care about the skin. He also discussed about "Acne" which is a disorder of the skin's oil glands. Whenever there is a problem related to skin we always consult Doctor. He told about the causes of "Hair Loss", preventions and cure. He gave some tips about how to handle "Blemishes and Wrinkles".

There was a query session held by Dr Avnish Goel with the audience who clear their doubts with him and take some healthy advice from him. A heavy discount was given to the people who purchased their product from their stall.

- Ajay Bansal, MCA

Program in MCA

Dr. Kanwal Singh DG, Tecnia Group felicitating the Alumni of Tecnia

Mr. Sumit, Alumni Tecnia presenting his views

Top 6 Best Budget Smartphones To Buy In 2012

The mobile phone market is one of the biggest industries in the world. There are plenty of mobiles design for the sake of customer's needs and requirements. The mobile market is full of budget and expensive mobiles. As people are more

conscious about the budget, most manufacturers think their mobile cost structure gets into the hands of end users. The mobile market is still expanding its strategy by releasing latest featured **budget smartphones** day-by-day.

Here's a list of six new budget smartphones that hit the mobile market in 2012 at reasonable prices with budgeted business telecoms.

1. BlackBerry Curve 9380

This is a full face touchscreen device. It's smaller and have lighter weight. It has 5-mega pixel snapper, office and social networking features. It's a decent mobile handset for anyone new to touchscreen mobiles. The battery is pretty much standard and works for the whole one day. Surfing the net is pretty speedy. It's a simple and handy mobile. If anyone looking for comfortable and familiar choice of mobiles, it's better to select this **budget smartphone** that is cheaply available in the market too.

2. HTC 7 Trophy

Due to its vivid 3.8 (97mm) inch screen, its very handy device to users. It has 1GHz Snapdragon processor and new gaming levels. It's one more financial viable mobile that runs on user-friendly OS. This HTC 7 Trophy windows mobile smartphone feature 5 MP camera and Wi-fi, bluetooth. It's one of the affordable handsets out of better choices available in the market.

3. Samsung Galaxy Ace

It's more powerful Android smartphone. It's perfect for trendy and responsible young professional. With its sophisticated and simple design, it gives mobile users an unbelievable experience with its 3.5″ TFT capacitive touchscreen, 800 MHz processor, Wi-Fi and 5 MP camera. With its attractive design, features and cost effective version, most of people prefer to go for this

सिक्कों में दिखती है देवनागरी

शहाबुद्दीन गौरी से अकबर राजत्व काल तक, प्रायः चार सौ वर्षों तक बादशाही सिक्कों पर देवनागरी लिपि को प्रवेश प्राप्त था। उक्त सिक्कों में बादशाहों के नाम और अन्य विशेषण देवनागरी लिपि में अंकित रहते थे।

शहाबुद्दीन गौरी ने अपनी दिग्विजय में हिन्दुओं और हिन्दू धर्म की गंभीर क्षति की। किन्तु हिन्दू राजाओं के समय से प्रचलित देवनागरी लिपि और राज्य चिन्ह को उसने सिक्कों से सुरक्षित रखा।

बादशाह मोईज्जुद्दीन मोहम्मद साम व शहाबुद्दीन गौरी के सिक्कों पर देवनागरी लिपि में (क) स्री मदमद विनसाम (ख) स्रीमद हमीर स्री महमद साम, महमूद बिन साम और ताजुद्दीन यलदोज के सिक्कों पर स्री हमीर, शहसुद्दीन एलतमश के सिक्कों पर (क) स्री हमीर (ख) सुरितां स्री रूक्ण दीण, रजिया बेगम के सिक्कों पर स्री मुइज, अलावुद्दीन महमूदशाह के सिक्कों पर स्री सुलतां जलालुदी, गयासुद्दीन तुगलक शहा के सिक्कों पर स्री सुलतां गयासदी, शेरशाह के सिक्कों पर स्री सेर साहि, इसलामशाह सूर सलीमशाह के सिक्कों पर स्री इसलाम ताहि और अकबर बादशाह के सिक्कों पर 'श्रीराम' भी अंकित थे।

जनता की दृष्टि में अपने-अपने प्रशासन को सरल एवं सुलभ बनाने के उद्देश्य से शहाबुद्दीन, मौहम्मद गौरी से शेरशाह सूरी तक सभी समर्थ बादशाहों के सिक्कों पर देवनागरी लिपि में 'श्री हम्मीर' (श्री हमीर) आदि उत्कीर्ण है।

बादशाह अकबर द्वारा प्रचलित अनेक सिक्कों में से एक सिक्का ऐसा भी था जिसमें एक और श्रीराम और सीताजी की युगल मूर्ति थी और देवनागरी लिपि में 'श्रीराम' शब्द अंकित थे और दूसरी और इलाही महीना और इलाही सन् अंकित थे। ऐसे सिक्कों में बादशाह अकबर का नाम अथवा उसका राज्य चिन्ह अंकित नहीं था।

शुद्धता की दृष्टि से, शेरशाह के शाही फरमान फारसी लिपि के अतिरिक्त देवनागरी लिपि में भी समानान्तर रूप से लिखे जाते थे।

फरमानों में सर्वप्रथम फारसी में, तत्पश्चात् उसकी पुनरावृत्ति देवनागरी लिपि में की जाती थी। फारसी इबारत में गांवों के नाम के उच्चारण और संदेहों की स्पष्टता के लिए देवनागरी लिपि का प्रयोग किया जाता था। शुद्धता की दृष्टि से ही देवनागरी लिपि का व्यवहार फरमान में किया जाता था।

शेरशाह ने प्रत्येक परगना में दो कारकुन नियुक्त किए थे- एक कारकुन हिन्दी लिखने के लिए और दूसरा, फारसी के लिए। लोदी वंश की बादशाहत में भी देवनागरी लिपि में भी फारसी फरमान लिखे जाने की प्रथा थी।

लोदी सुल्तान की सनद सर्वप्रथम फारसी में और उसकी नीचे देवनागरी लिपि और फारसी भाषा में लिखी जाती थी। लोदियों के शाही फरमान सूरियों की तरह ही लिखे जाते थे। लोदी और सूरी सुल्तानों के शाही फरमानों में एकरूपता है, फारसी और देवनागरी लिपियों की समानान्तर व्यवस्था है। पंडित चन्द्रबली पांडे का यह कथन सत्य है कि गजनी के महमूद से लेकर दिल्ली के श्री सुल्तान अहमद आदिल शाही सूर तक के सिक्कों पर नागरी विराजमान है।

अकबर राजत्व काल (1556 ई0–1605ई0) से औरंगजेब राजत्व काल (सन् 1658 ई0–1707ई0) तक के सरकारी कागजात में हिंदी भाषा और देवनागरी लिपि की आंशिक प्रविष्टि यदा-कदा होती रही। प्रथम हिन्दी साहित्य सम्मेलन (1910ई0) के काशी अधिवेशन के अवसर पर पठित निबंध 'मुसलमानी राजत्व में हिन्दी' में मुंशी देवी प्रसाद ने सच कहा था-

'काजी लोग जो मुकदमे के फैसले लिखते थे या कानूनगो सरकारी कागज और परवाने निकालते थे उसमें भी कभी-कभी हिन्दी लिखी जाती थी। जमीन संबंधी फैसलों में ऐसे हिन्दूवादी प्रतिवादी के समझने के लिए जो फारसी पढ़े नहीं होते थे फारसी के नीचे कुछ सारांश हिन्दी में भी लिख दिया जाता था। गांव वालों के नाम के परवाने दस्तक और इतलाकनामें वगैरा बहुधा हिन्दी में भी होते थे। इस हिन्दी की रोक किसी ने नहीं की थी। औरंगजेब के समय भी यह चलती रही थी।

तात्पर्य यह कि प्रारम्भ में इस्लाम का आग्रह किसी लिपि के प्रति नहीं था। लिपि के प्रति उसकी दृष्टि उदार और समन्वयवादी थी। मुगल बादशाहों ने देवनागरी लिपि का सम्पूर्ण बहिष्कार नहीं किया। उसके शासन काल में फारसी लिपि के साथ देवनागरी लिपि को भी शासकीय स्तर पर यंत्र-तंत्र प्रतिष्ठा मिलती रही।

प्रस्तुतिः विपुल प्रताप

सभारः नागरी संगम

अकबर के काल में भी कार्यालयों में थी हिंदी

विजयी मुसलमानों के शासन काल में विजित हिन्दुओं की हिन्दी भाषा और उसकी लिपि देवनागरी, अकबर राजत्व काल तक कार्यालयों में सुरक्षित रही। सुलतान सिकन्दर लोदी भी अपने धार्मिक पक्षपात के बावजूद हिन्दी कार्यालय को फारसी में परिवर्तित नहीं कर सका। विक्रम संवत 1638 (1581 ई0) में टोडरमल अकबर का प्रधानमंत्री था। उसने बड़ी सावधानी और बुद्धिमानी से राज्य कार्यालयों को हिन्दी से फारसी में परिवर्तित कर दिया। हिन्दूगण हिन्दी को विस्तृत कर जीविकोपार्जन हेतु फारसी में दक्षता प्राप्त करने लगे। राजा टोडरमल द्वारा प्रचलित फारसी में जमा–खर्च लिखने की रीति स्वतंत्रता–पूर्व तक मुसलमानों रियासतों में चलती रही। रजवाड़ों के हिन्दी दफ्तरों और बनियों के बही खातों पर भी उसका विशेष प्रभाव रहा है। राजा टोडरमल ने महकमा माल के कागजात हिन्दी में कर दिए थे जो सदैव प्रचलन में रहे। पटवारीगण भी नागरी अक्षरों में ही कागजातदेही दाखिल करते रहे। महाजनी और हुंडी की दस्तावेज भी देवनागरी लिपि और हिन्दी भाषा में उसने प्रचलित की। हुंडी के मसविदे में किसी प्रकार का परिवर्तन कठिन था। हिन्दी भाषा में अयोग्य व्यक्तियों के लिए भी फारसी अक्षरों में हुंडी की वही नकल अनिवार्य थी जो हिन्दी में लिखी जाती थी। विक्रम संवत 1969 में लिखित गोस्वामी तुलसीदास का पंचनामा अकबर राजत्वकालीन कार्यालयों में

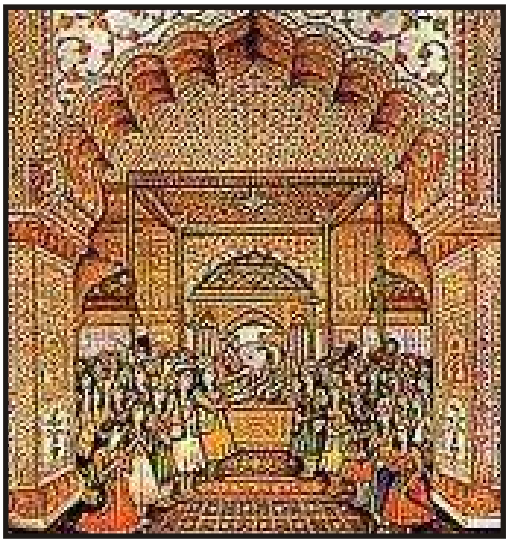

देवनागरी लिपि और हिन्दी भाषा के प्रचलन का प्रमाण है।

दक्षिण भारत के बादशाहों के दफ्तरों में हिन्दी और उसकी लिपि का स्थान सुरक्षित रहा।

अकबर से औरंगजेब की दक्षिण दिग्विजय तक शनैः शनैः विक्रम संवत 1640 से विक्रम संवत 1742 (1583ई0 से 1685ई0) तक हिन्दी मुसलमानों के दफ्तरों से निष्कासित कर दी गई और उसके स्थान पर फारसी भाषा और उसकी लिपि की कार्यालय–पद्धति प्रविष्ट हुई। गुजरात, मालवा, कश्मीर, बंगाल, सिंध आदि के हिन्दी कार्यालयों की यही स्थिति हो गई क्योंकि उक्त राज्य मुगल बादशाहों द्वारा अधिकृत कर लिए गए थे।

निष्कर्ष यह कि प्रायः आठ सौ वर्षों तक मुस्लिम बादशाहों के दफ्तरों में देवनागरी लिपि प्रचलित रही। किन्तु एक हिन्दू प्रधानमंत्री और हिन्दी के कवि राजा टोडरमल की अदूरदर्शिता से हिन्दी बादशाही दफ्तरों से खारिज कर दी गई। अकबर काल से फारसी भाषा और उसकी लिपि हिन्दुओं के लिए पद और प्रतिष्ठा–प्राप्ति का साधन बन गई। यहां यह उल्लेख कर देना अप्रासंगिक नहीं होगा कि बादशाही दफ्तरों से हिन्दी भाषा और उसकी लिपि के बहिष्कार करने के बावजूद अकबरनामा के अनुसार, अकबर ने अपने पौत्र खुसरो को 7 आजर सन 38 जलूसी तदनुसार अगहन सुदी 6 विक्रम संवत 1650 से हिन्दी विद्या का प्रारम्भ कराया था। आईने अकबरी में अकबर के हिन्दी प्रचार के अन्य रूपों के विवरण मिलते हैं।

प्रस्तुतिः विपुल प्रताप
साभारः नागरी संगम

कपड़े बनाते हैं आपको स्मार्ट

पार्टी आदि में जाने के लिए जब तैयारी का वक्त आता है तब सबसे ज्यादा वक्त लगता है कपड़ों का चुनाव करने में। यदि आपका वजन अधिक है तो और भी ज्यादा मुश्किल होती है। इसको आधार मानते हुए यदि आपने निम्नलिखित टिप्स को माना तो आपको ज्यादा परेशानियों का सामना नहीं करना पड़ेगा।

- यदि वजन अधिक है तो गहरे रंग के कपड़ों का चुनाव करें क्योंकि हल्के रंग वजन को उभारते हैं।

- लहंगे, सूट व साड़ी आदि के लिए जॉर्जेट, शिफॉन, व क्रेप आदि पतले फैब्रिक का चुनाव करें। लाइक्रा, नेट, ऑरगेंजा आदि मोटापे को और उभारते हैं।
- अधिक हील के फुटवियर पहनें, इससे आप कम मोटी लगेंगी।
- भारी काम वाली ड्रेस न खरीदें। साथ ही यदि ड्रेस हैवी है, तो ज्वैलरी कृपया हल्की रखें।
- बिल्कुल तंग कपड़े न पहनें, इससे आपके कर्व अधिक उभरेंगे।

– प्रस्तुतिः गौरव

साभारः हिंदुस्तान अखबार

यादें.....

(स्मरणिका)

प्यार और दोस्ती एक ऐसी चीज़ है जिसे बनाने में बहुत समय लगता है पर टूटने में सिर्फ एक पल। इसका अहसास केवल खुद को ही होता है किसी और को नहीं। इसे साबित करने के लिए आपको सुनाती हूं अपनी आप बीती– आठ साल पहले की बात है जब मैं अपने माता–पिता के साथ अरूणाचल प्रदेश के सगाली शहर में रहती थी। पापा वहां पर काम करते थे। मेरे घर के बगीचे में एक कुतिया ने 4 बच्चों को जन्म दिया। जिनका नाम हम बहन भाइयों ने मिलकर रखे – टिंकी, मिंकी, चिंकी और जैकी। हम सभी बहन भाई मिलकर उनके साथ पूरा पूरा दिन खेला करते थे क्योंकि सगाली का मौसम ऐसा था कि अगर एक बार बारिश शुरू होती थी तो 15–20 दिन से पहले रुकती नहीं थी। घरों से बाहर तक नहीं निकल पाते थे।हम बहन और भाइयों में से मुझे इन बच्चों से ज्यादा लगाव हो गया था। मेरा पूरा दिन उनके साथ खेलने में निकल जाता था। मैं उन्हें समझने लगी थी और वे भी मुझे पहचानने लगे थे। कब उन्हें भूख लगी है, कब ठण्ड लग रही है आदि। मैंने उन चारों के लिए गत्ते के डिब्बे को एक घर का रूप दिया और सीढियों के नीचे रखा जिससे किसी को भी असुविधा न हो। चारों बच्चों को उस गत्ते के घर में एक बार रखा तो वह तो उस घर के ही हो गये। पता ही नहीं चला कि एक महीना कब बीत गया। एक महीने के बाद वे अपनी मां के पीछे – पीछे बाहर भी जाने लगे थे। बाहर जाने की वजह से उनमें से चिंकी और मिंकी की मौत हो गयी। उनके इस दुनिया को छोड़जाने से मेरे बाल मन पर गहरा असर हो गया। कहते हैं कि बच्चों का मन निर्मल पानी की तरह होता है जिसमें जो अपने आपको देखना चाहे देख सकता है और एक तस्वीर ज्यादा

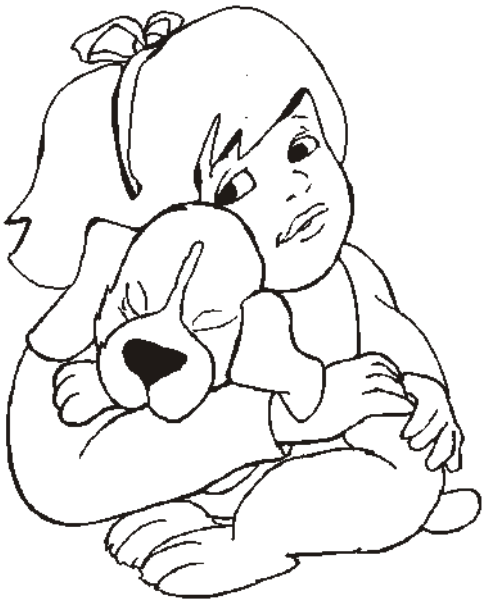

दिन तक नहीं रहती। ऐसा ही कुछ मेरे साथ भी हुआ। चिंकी और मिंकी के चले जाने से कुछ दिन तक तो मुझे अटपटा लगा लेकिन बाल मन को बिछुड़ने से ज्यादा मिलने की खुशी ज्यादा होती है। ऐसा ही मेरे साथ हुआ क्योंकि अब भी जैकी और टिंकी मेरे साथ खेलने के लिए बचे थे।केवल मनुष्य से ही लगाव हो यह जरूरी नहीं है यह लगाव किसी जानवर, पक्षी या किसी निर्जीव वस्तु से भी हो सकता है। जैकी और टिंकी से भी मुझे कुछ ऐसा ही लगाव हो गया था। और मुझे ही नहीं अपितु उन दोनों को भी मुझसे लगाव हो गया था। वे हर दम मेरे साथ ही रहते थे, चाहे कोई भी मौसम हो या कोई भी जगह। यदि एक दिन भी मैंउन दोनों को नहीं देखती या उनके साथ नहीं खेलती थी तो मन उदास हो जाता था।बालपन में खेल आदि तो सही चल रहा था लेकिन अनिश्चित मौसम की वजह से पढ़ाई का काफी नुकसान हो रहा था। पापा ने एक बहुत हृदय विदारक फैसला लिया कि हमें उन्होने बेहतर भविष्य की खातिर हम बहन भाइयों को नोएडा भेजने का निर्णय सुनाया। एक दो दिन तो हम सकते की हालत में थे, हमें यह समझ नहीं आ रहा था कि हम क्या करें और क्या नहीं। और हम लोग जल्दी ही नोएडा आ गए। जैकी और टिंकी से जुदाई का गम हमें खासकर मुझे सालता रहा। बीच बीच में पापा से उन दोनों के बारे में समाचार मिलता रहा कि वे ठीक हैं। चार साल तक मैं अरूणाचल प्रदेश नहीं जा पायी। दसवीं के बोर्ड की परीक्षा के बाद मेरा मम्मी के साथ सगाली जाना हुआ। तब तक जैकी और टिंकी की यादें धुंधला चुकी थी। लेकिन वहां पहुंचने के बाद जैसे ही घर पहुंची तो वे दोनों पता नहीं कहां से निकल कर आए और मुझ से लिपट कर मेरे पैर चाटने लगे। शायद उनका अपने ढंग से खुशी जताने का यही तरीका था। अचानक उन्हें देख कर मैं अवाक् रह गई और इतने दिन बाद उनसे मिलने की वजह से मेरी आँखों में पानी आ गया और इतनी खुशी हुई कि उस खुशी को मैं शब्दों में ब्यान नहीं कर सकती।कहा जाता है कि प्यार करने वालों को प्यार ही मिलता है और नफरत करने वालों को नफरत। दोस्ती ऐसी होनी चाहिए कि चाहे कितनी भी मुश्किलें आएं वह कभी न टूटे या फिर कितना भी समय हो जाए मिले हुए। मैनें अपनी इन छुट्टियों को खूब मजे से बिताया।पढ़ाई की वजह से मुझे वापस नोएडा आना पड़गया। एक साल बाद पता नहीं कैसे टिंकी की मौत हो गयी। पांच साल अलग रहने के बाद भी ऐसा लगा कि जैसे मुझ से कोई मेरा अपना छूट गया। मेरे किसी अपने की मौत हो गयी हो। मैं जैकी को अपने साथ रखने की कोशिश करती रही लेकिन किसी न किसी वजह से मैं उसे सगाली से नोएडा लाने में असमर्थ रही। एक साल तक जैकी ने पापा और घर दोनों की

Top 6 Best Budget Smartphones To Buy In 2012

.....contd from pg 3

as the mobile has everything that they would like to have in smartphones.

4. Nokia 500

It's a great production of Nokia Symbian line, Nokia 500 smartphone packs a powerful features like 1 GHz processor to run your apps smoothly, Wi-Fi coverage, GPS, Bluetooth, 3.2″ TFT capacitive touchscreen, social networks, etc. It's an affordable mobile at consumers' budget with decent specifications.

5. LG Optimus One

It's one of the budget smartphones for the customers. If you're a budget viewer, then this mobile selection is the ultimate choice too. It packs all the features that you would expect to have in smartphones. With its eye catching features and specifications, it targets all from budget to high end users. So, avail this smartphone for less price.

6. HTC Wildfire

It's an impressive budget smartphone that lets you take great shot with its 5 MP camera, great access to social networks, 3.2″ TFT capacitive touchscreen, Integrated FaceBook App, GPS, Bluetooth, etc. It's more suitable mobile bringing Android technology to the budget users.

Source: itechwit.com

This Month

September 25, 1690 - The first American newspaper was published. A single edition of Publick Occurrences Both Foreign and Domestick appeared in Boston, Massachusetts. However, British authorities considered the newspaper offensive and ordered its immediate suppression.

*****

September 26, 1687 - The Acropolis in Athens was attacked by the Venetian army attempting to oust the Turks, resulting in heavy damage to the Parthenon.

*****

September 1, 1715 - The "Sun King" (King Louis XIV of France) died. He had ruled since the age of five and was succeeded by his 5-year-old great-grandson Louis XV.

*****

September 14, 1741 - Composer George Frederick Handel finished Messiah after working on it nonstop for 23 days.

*****

September 2, 1752 - The British ended their use of the Julian calendar, switching instead to the Gregorian calendar, resulting in a major adjustment as Wednesday, September 2, was followed by Thursday, September 14. The correction resulted in rioting by people who felt cheated and demanded the missing eleven days back.

*****

Compilation: Vipul Partap

देखभाल की। कुछ समय पश्चात् पापा ने कार ली और ऐसा लगा कि मेरा सपना सच हो गया हो। मैं पापा के साथ जैकी को नोएडा तक कार से ले आयी। सगाली और नोएडा के मौसम में अंतर होने की वजह से जैकी को कई दिन लग गए यहां के मौसम से तालमेल बैठाने में। कई दिन तक तो उसने खाना ही नहीं खाया, बीमार भी रहा। पापा के पास 5 साल तक रहने की वजह से उनसे काफी घुलमिल गया था। उनके बिना उसका मन नहीं लगता था। यदि पापा एक दिन भी उससे मिले बिना चले जाते तो वह दिन भर उन्हीं को ढूंढता रहता था। एक दिन पापा उससे मिले बिना कहीं काम से चले गए। जैकी पापा को ढूंढते हुए पता नहीं कहां चला गया। बहुत ढूंढने पर भी जैकी कहीं नहीं मिला। आज दो साल हो गए लेकिन जैकी वापस नहीं आया। आज भी ऐसा लगता है कि जैसे जैकी से कोई रिश्ता था जैसे किसी जन्म का। सच है कि सच्चा दोस्त या प्यार भुलाए नहीं भूलता। आज भी लगता है कि जैकी अभी वापस आ जाएगा। वह हमारे दिलों में अपनी जगह बना चुका है। उसकी यादें खत्म ही नहीं होती।

दीपिका 'गुड़िया'

Basics of Media

Interlaced Scanning: In this system the beam skips every other line during its first scan, reading only the odd-numbered lines. After the beam has scanned half of the last oddnumbered line, it jumps back to the top of the screen and finishes the unscanned half of the top line and continues to scan all the even-numbered lines. Each such even- or odd-numbered scan produces a field. Two fields produce a complete frame. Standard NTSC television operates with 60 fields per second, which translates into 30 frames per second.

*****

Progressive Scanning: In this system the electron beam starts with line 1, then scans line 2, then line 3, and so forth, until all lines are scanned, at which point the beam jumps back to its starting position to repeat the scan of all lines.

*****

Quantizing: A step in the digitization of an analog signal. It changes the sampling points into discrete values. Also called quantization.

*****

RGB: Red, green, and bluethe basic colors of television.

*****

Sampling: The process of reading (selecting and recording) from an analog electronic signal a great many equally spaced, tiny portions (values) for conversion into a digital code.

*****

Camcorder: A portable camera with the videotape recorder or some other recording device attached or built into it to form a single unit.

*****

Compilation: Rahul Mittal & Bharat Banga

India marches with young brigade

India marches out as a winer with the young brigade in all the departments whether it is batting, bowling or fielding. It was just a two-Test match series, against a team neither esteemed, nor feared. Yet, India's 2-0 series win over New Zealand does indicate an emerging change of guard, a paradigm shift which is likely to become more pronounced in the days to come. For the first time in more than a decade, India's victory charge was almost completely fuelled not by the legends and the veterans but the young kids on the block.

India have been superbly served by a golden generation of heavyweights like Sachin Tendulkar, Rahul Dravid, VVS Laxman, Sourav Ganguly, Anil Kumble, Virender Sehwag, Harbhajan Singh and Zaheer Khan. These stalwarts took the team to many historic triumphs and the No. 1 rank in Tests. But change had to happen somewhere along the line and a new breed of players needed to showcase its talent to reassure the Indian fan.

That happened in the recently concluded series against the Kiwis it was left to the rookies to show the way after the big names failed to stamp their authority on the Tests. Virat Kohli and R Ashwin led the batting and bowling departments with élan and skill while Cheteshwar Pujara and Pragyan Ojha were able allies.

Ashwin, Man of the Series, was a riddle the Kiwis could not solve. The off-spinner wrested 18 wickets in the series at just 13.11 runs per wicket and Ojha (13 wickets at 18.46) was just the ideal foil for Ashwin and the duo exploited New Zealand's traditional weakness against spin. On the other hand, Zaheer Khan (3 wickets at 59.66), the pace bowling spearhead for many years now, did not look incisive enough and proved easy fodder for batsmen.

Kohli led from the front when the team was in dire straits in the second Test at Bangalore. With the ball seaming in overcast conditions, Indian batsmen were put through a stern examination by Southee and Co. Only Kohli, and skipper MS Dhoni to some extent, came out with flying colours. Kohli (212 runs in the series at 106.00) hit a crucial century in the first innings to lift the team out of troubles waters. In the second inning too, it was Kohli who steadied the ship and then took it home, helped along by Dhoni after the hosts were 166 for 5, still 95 away from the target.

In the first Test, it was Pujara (216 runs at 72.00) who provided substance to the Indian innings with a classy 159, helping set up a big total which led to a landslide win. In comparison, Tendulkar (63), Sehwag (128) and Gautam Gambhir (58) had forgettable outings. Sehwag did get a start in all three innings but could not get the biggie which would have whetted his appetite.

With Dravid and Laxman no longer there to rescue the team, having retired recently, the failures of the top men could have pushed the team into a hole. Thankfully, Kohli and Pujara, and their captain made sure the runs came thick and fast. There will be test of Indian young brigade when Australia and other teams will tour India later this year.

Vol. 8 **No.** 9
L/BIL/2004/14598
Publisher: Ram Kailsah Gupta on behalf of Tecnia Institute of Advanced Studies, 3 PSP, Madhuban Chowk, Rohini, Delhi-85; **Printer:** Ramesh Chander Dogra; **Printed at:** Dogra Printing Press, 17/69, Jhan Singh Nagar, Anand Parbat, New Delhi-5
Editor: Rahul Mittal, responsible for selection of News
under PRB Act. All rights reserved.

IMPORTANT QUOTES

"I am ready to meet my Maker. Whether my Maker is prepared for the great ordeal of meeting me is another matter."

- Sir Winston Churchill

*****

"I shall not waste my days in trying to prolong them."

- Ian L. Fleming

*****

"If you can count your money, you don't have a billion dollars."

- J. Paul Getty

*****

"Facts are the enemy of truth."

- Don Quixote

*****

"When you do the common things in life in an uncommon way, you will command the attention of the world."

- George Washington Carver

*****

"How wrong it is for a woman to expect the man to build the world she wants, rather than to create it herself."

- Anais Nin

*****

Compilation: Bharat Banga

Winners V/s Loosers

Part-14

Winners give their best for the things that they decide to do, Losers work half heartedly in everything that they do.

*****

Winners are persistent and will do whatever it takes (ethical means) to achieve their goal, Losers give up when obstacles pop up.

*****

Winners think about possibilities, Losers focus on obstacles that will stop them from achieving.

*****

Winners are certain, Losers doubt.

*****

to be continued in next issue

Compilation: Rahul Mittal

All Students and Faculty are welcome to give any Article, Feature & Write-up along with their Views & Feedback at youngster.tecnia@gmail.com